eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

अशोक मेहता और एशियाई समाजवाद

[1]डॉ0 मनोज कुमार सिंह

[1]प्रभारी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्राम विकास संस्थान डॉ भी0रा0अ0 विश्वविद्यालय आगरा

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

एशिया में लोकतांत्रिक समाजवाद का कार्य पूंजी का सदुपयोग करते हुए गरीबी बेकारी अशिक्षा आदि बुराइयों का खात्मा ही हो सकता है। जबकि समाज के सभी तबकों में जागरूकता उत्पन्न की जाए और उस इस जागरूकता का आधार सांस्कृतिक अतीत में खोजा जाए। जीन ज्यूरेस कहते हैं कि जिस प्रकार अलग–अलग तापमान पर धातुएं पिघलती है, उसी प्रकार नैतिक तापमान होता है जिस पर व्यक्ति नई–नई क्रियाएं प्रकट करता है लेकिन दुर्भाग्य से एशियाई समाजवादी अपनी सांस्कृतिक जड़ों को खोदने में असफल रहे हैं।

यूरोप में समाजवाद की समस्या यह है कि वहां समाज के अधिकांश वर्ग उसका समर्थन नहीं करते हैं, वहीं एशियाई समाजवाद की समस्या बिल्कुल अलग है। यहां के अधिकांश राजनीतिक दल अपने आप को समाजवादी घोषित करते हैं। यही कहा जा सकता है कि किसी विचार को धरातल पर उतारने के लिए समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप उसमें परिवर्तन करने अनिवार्य होते हैं। समाजवाद को भी यदि जीवन एवं व्यवहारिक बनाए रखना है तो देश काल की परिस्थितियों के अनुसार इसको निरंतर रूपांतरण करते रहना होगा ।एशियाई समाजवाद की त्रासदी दोहरी है एक और तो अधिकांश मामलों में एशिया की परिस्थितियों के अनुसार समाजवादी विचारों को ढालने का प्रयास नहीं किया गया है, दूसरी ओर जहां कहीं भी प्रयास हुआ है, वह निहित स्वार्थी तत्वों एवं समझौता परस्त तत्वों के द्वारा किया गया है, परिणामस्वरूप छद्म समाजवादी के समाजवादियों के हाथों में पड़कर एशियाई लोकतांत्रिक समाजवाद विकृत एवं कांतिहीन होता जा होता गया है।

मुख्य शब्द– अशोक मेहता, एशिया में लोकतांत्रिक समाजवाद, कार्य पूंजी का सदुपयोग, गरीबी बेकारी अशिक्षा।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

Introduction

एक नीति के रूप में समाजवाद का प्रारंभ राजनीति के प्रारंभ के साथ ही हुआ है। लेकिन एक सिद्धांत के रूप में यह तब तक प्रारंभ हुआ, जब राज्य को समाज में प्रचलित अन्य कारकों से अलग कर विशिष्ट कार्य क्षेत्र सौंपा गया। प्राचीन यूनान में हम प्लेटो के रिपब्लिक को राज्य समाजवाद से जोड़ सकते हैं और प्राचीन रोम में नगरपालिका समाजवाद को देख सकते हैं। समाजवाद शब्द लैटिन के शोषण शब्द से उद्भूत हुआ है इसका अर्थ 'कॉमरेड या भाई' है। इस प्रकार समाजवाद समाज में भातृत्व की भावना का प्रतीक शब्द है। समाजवाद वह नीतियां, सिद्धांत है इसका लक्ष्य केंद्रीय लोकतांत्रिक सप्ताह की कार्यवाही द्वारा बेहतर वितरण सुनिश्चित करना है और अधीनता के फलस्वरुप अभी प्रचलित समृद्धि से अधिक और बेहतर उत्पादन करना है।

यूरोपियन समाजवादियों को समाजवाद की वास्तविक सीख बाइबल की निम्न पंक्तियों से मिली "विश्वास करने वालों की मंडली एक चित्त और एक मन के थे । यहां तक कि कोई अपनी संपत्ति अपनी नहीं कहता था, परंतु सब कुछ साझे का था, और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था और उनमें कोई दरिद्र नहीं था, क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे वे अब उनको बेच बेचकर बिकी हुई, वस्तुओं का दाम लाते और उसे प्रेरितों को उनके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे।''

1803 में इटली में सर्वप्रथम समाजवाद शब्द का प्रयोग किया गया था, लेकिन इसका अर्थ आधुनिक समाजवाद से इतर था। 1827 में समाजवादी शब्द का प्रयोग कोऑपरेटिव मैगजीन में राबर्ट ओवन के अनुयायियों के लिए किया गया था। 1833 में नियमकालीन फ्रेंच पत्र 'लशलोब' में सेण्ट साइमन के सिद्धांत की व्याख्या और विशेषता प्रकट करने के लिए हुआ। 1848 ने कार्ल मार्क्स ने अपने विश्व प्रसिद्ध 'कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो' में वैज्ञानिक समाजवाद शब्द का प्रयोग किया। उसके बाद 120 वर्षों में ना जाने इस शब्द का कितना प्रयोग हुआ, किंतु इतने भिन्न भिन्न अर्थों में कि इसका सामान्य आशय समझने के लिए गंभीर विवेचन की आवश्यकता है।

अशोक मेहता का एशियाई समाजवाद पर गहन विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण :

एशियाई समाजवाद के साथ भी यह बात लागू होती है कि इसका आशय शेष समाजवादी विचारों से अलग होता जा रहा है। अशोक मेहता ने एशियाई समाजवाद पर गहन विश्लेषणात्मक

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

दृष्टि से विचार किया है। यूरोपियन समाजवाद के साथ एशियन समाजवाद की तुलना करते हुए मेहता ने इसकी आलोचना एवं समाधान भी सामने रखा है।

समाजवाद एक जीवित एवं निरंतर गतिशील आंदोलन रहा है, एशियाई समाजवाद भी इसका अपवाद नहीं है। एशियाई लोकतांत्रिक समाजवाद ने अपने आपको एशिया के हितों एवं परिस्थितियों के अनुकूल ढाला है, परिणामस्वरूप इसमें अनेक संगतिया भी सम्मिलित हो गई है प्रथमतः समाजवाद राजशाही एवं सामान्तशाही का घोर विरोधी रहा है लेकिन नेपाली समाजवादियों ने एक लंबे समय तक राजशाही के साथ मिलकर कार्य किया हैद्य द्वितीयतः मूल रूप से समाजवाद व राष्ट्रवाद एक दूसरे के विरोधी रहे हैं लेकिन इजरायली समाजवादी कट्टर राष्ट्रवादी स्वरूप को धारण कर चुके हैंद्य तृतीयतः समाजवाद के जनक कार्ल मार्क्स ने धर्म को अफीम की संज्ञा दी थी लेकिन भारत में समाजवादी तत्वों ने अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की नीति का घोर समर्थन किया है।

एशियाई समाजवाद के साथ एक अन्य परेशानी आधुनिकता और परंपरा का सम्मिश्रण रहा है। अलग–अलग एशियाई राष्ट्रों के समाजवादियों ने आधुनिकरण का समर्थन करने के बाद परंपराबाद की शक्तियों के समक्षअनेक बार घुटने टेके हैं द्यइजराइली राष्ट्र के समक्ष अपने अस्तित्व को बनाए रखनेव पुनर्निर्माण का यक्ष प्रश्न था। परिणाम स्वरूप इजरायली समाजवादियों ने राष्ट्र वादियों के साथ गठबंधन करना स्वीकार कर लियाद्य इसी प्रकार भारत में समाजवादियों ने जातिवाद की बुर्जुआ ताकतों के साथ हाथ मिलाकर समाजवाद के मूल विचार से अलग हटने का कार्य किया है लेकिन अनेक स्थानों पर एवं अनेक बार एशियाई समाजवादियों ने बिना किसी विशेष समझौते के भी कार्य किए हैं , जो कि जापानी समाजवाद को लगभग उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ा है –जो यूरोपियन समाजवाद के लिए सामान्य थी अतएव उनका समाजवाद के मूल सिद्धांतों पर रहना कोई बड़ी बात नहीं थी। इसी प्रकार इंडोनेशिया भारत में समाजवादियों को किसी विशेष वैचारिक चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा द्य अतएव इन राष्ट्रों के समाजवाद का यूरोपियन समाजवाद से मेल खाना स्वाभाविक ही है।

अशोक मेहता ने इस प्रश्न का विश्लेषण करने का प्रयास किया है कि एशियाई समाजवादी नेतृत्व राष्ट्रीय आंदोलनों की मुख्यधारा में क्यों ना आ सका और व्यापक जागृति के द्वारा सत्ता और समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन क्यों ना ला सका?

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

वास्तव में इसका कारण यह रहा है कि एशियाई समाजवादी अपने यूरोपियन भाइयों के समान अपने आपको आम जनता से जुड़ने में असफल रहे एशिया में समाजवादी ट्रैड यूनियंस और अन्य समाजवादी संगठन सामाजिक धरातल से अपने आप को भली प्रकार नहीं जोड़ सके हैं, अतएव राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलनों का नेतृत्व संभालने में वे असफल सिद्ध हुए। एशियाई समाजवादियों की असफलता का प्रथम कारण यह रहा है कि इन लोगों ने धर्म ,आस्था एवं पुरोहित वर्ग का विरोध करने से बचने का प्रयास किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि एक और तो जहां वे लोग आधुनिकरण के समर्थकों से समर्थन पाने से वंचित रह गए वहीं दूसरी ओर धार्मिक ताकतें भी उन्हें संशकित नजरों से देखती रही और कहीं–कहीं तो उन्होंने समाजवादियों का घोर विरोध किया है।

एशियन समाजवाद की असफलता का द्वितीय महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि यह लोग बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भी उसी पुराने वर्ग संघर्ष सिद्धांत को दोहरा रहे जिसको शेष विश्व नकार चुका है। एशियाई समाजों में राष्ट्रीय और सामाजिक एकीकरण की समस्या अधिक विकराल रही है, इस समस्या के समाधानार्थ एशियाई समाजवादियों ने अपने यूरोपियन पूर्ववर्तियों के उदाहरण का अनुकरण नहीं किया है। समय–समय पर एवं अलग–अलग राष्ट्रों में एशियन समाजवादियों ने भाषाई, धार्मिक, कबीलाई एवं क्षेत्रीयतावादी शक्तियों से लड़ने के स्थान पर इनसे हाथ ही अधिक मिलाया है।

यूरोपियन समाजवादियों ने अपनी हिंसक एवं निरंकुश कार्यप्रणाली के द्वारा अपने समाज को आधुनिक बनाने का प्रयास किया है एवं यह कहा जा सकता है कि उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त हुई है ,लेकिन एशिया में समाजवाद के सर्मथकों ने में जब–जब परंपरानिस्ट समाजों को आधुनिक बनाने के लिए निरंकुशता एवं हिंसा की पद्धति का आश्रय लिया है तब तब उन्हें घोर असफलता का मुंह देखना पड़ा।

कंबोडिया एवं अफगानिस्तान इसके अच्छे उदाहरण है कंबोडिया में खमेर रूज के शासनकाल में 1975 से 80 में घोर हिंसा के द्वारा पूर्णता आधुनिकरण का प्रयत्न पूर्ण असफलता एवं अपयश का भागी बना इसी प्रकार अफगानिस्तान में समाजवादी सरकारें 1978 से 1989 आधुनिकीरण को थोपने के प्रयत्न में अब सामान्य अफ़गानों का शत्रु बन गई थी।

यूरोप में समाजवादी विचार ने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से काफी कुछ प्राप्त किया है परिणामस्वरूप वहां पर समाजवाद का विचार जन सामान्य के लिए ग्राहा हो सका हैलेकिन एशिया की त्रासदी यह है कि यहां के कम्युनिस्ट दल अपने आदर्शों, विचारों, कार्यक्रमों एवं यहां तक की

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

शब्दावली के लिए भी यूरोप की ओर ताकते रहे हैं परिणाम स्वरूप एशियाई लोकतांत्रिक समाजवाद जन सामान्य से कट सा गया है ।

एशिया में लोकतांत्रिक समाजवाद का कार्य पूंजी का सदुपयोग करते हुए गरीबी, बेकारी, अशिक्षा आदि बुराइयों का खात्मा ही हो सकता है, लेकिन यह कार्य भी संपन्न किया जा सकता है जबकि समाज के सभी तबकों में जागरूकता उत्पन्न की जाए और इस जागरूकता का आधार सांस्कृतिक अतीत में खोजा जाए। जीन ज्यूरेस कहते हैं कि जिस प्रकार अलग–अलग तापमान पर धातुएं पिघलती है उसी प्रकार नैतिक तापमान होता है, जिस पर व्यक्ति नई–नई क्रियाएं प्रकट करता है लेकिन दुर्भाग्य से एशियाई समाजवादी अपनी सांस्कृतिक जड़ों कोखोदनेमें असफल रहे हैं .

यूरोप में समाजवाद की समस्या यह है कि वहां समाज के अधिकांश वर्ग उसका समर्थन नहीं करते हैं वहीं एशियाई समाजवाद की समस्या बिल्कुल अलग है, यहां के अधिकांश राजनीतिक दल अपने आप को समाजवादी घोषित करते हैं अधिकांश राजनीतिक दलों का अपना पृथक समाजवादी संस्करण है और वे अपने आप को ही विशुद्ध समाजवादी मानते हैं परिणाम स्वरूप एशिया में अंतहीन बहस चलती रही है कि वास्तविक समाजवादी कौन है और कौन छद्मम समाजवादी है ?

निष्कर्ष : यही कहा जा सकता है कि किसी विचार को धरातल पर उतारने के लिए समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप उसमें परिवर्तन करने अनिवार्य होते हैं ।समाजवाद को भी यदि जीवन्त एवं व्यवहारिक बनाए रखना है तो देश काल की परिस्थितियों के अनुसार इसका निरंतर रूपांतरण करते रहना होगा ।एशियाई समाजवाद की त्रासदी दोहरी है एक और तो अधिकांश मामलों में एशिया की परिस्थितियों के अनुसार समाजवादी विचारों को ढालने का प्रयास नहीं किया गया है दूसरी ओर जहां कहीं भी प्रयास हुआ है, वह निहित स्वार्थी तत्वों एवं समझौता परस्त तत्वों के द्वारा किया गया है, परिणामस्वरूप छद्म समाजवादी के हाथों में पड़कर एशियाई लोकतांत्रिक समाजवाद विकृत एवं कांतिहीन होता गया है।

एशियाई लोकतांत्रिक समाजवाद के पुनरुत्थान के लिए वास्तव में पूर्ण वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है और हम सबकी मजबूरी यह है कि हम लोग इस वैचारिक क्रांति के लिए एक और कार्ल मार्क्स, महात्मा गांधी ,लेनिन या माओ की प्रतीक्षा के सिवाय कुछ नहीं कर सकते हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

सन्दर्भ ग्रन्थ

- एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका से साभार
- इनसाइक्लोपीडिया , १३ वाँ संस्करण, वॉल्यूम 25–26 वर्ष 1926 न्यूयार्क पृ० 301
- बाइबिल , प्रेरितों के काम, अध्याय 2 , 32 से 35 पृ० 172
- अशोक मेहता – एशियाई समाजवाद एक अध्ययन –अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ प्रशासन प्रकाशन , राज घाट काशी, पृ० ३
- अशोक महिला – समाजवाद एक अध्ययन अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ प्रकाशन , घाट काशी, पृष्ठ 95 .
- Verinden Grover & Asoka Mehta; a biography of his vision and ideas, Deep and the publication, New Delhi, pp & 448
- Virendra Grover &Ashok Mehta ; biography of his vision and ideas, Deep and deep publication, New Delhi, page448 to 49